शेख़ फ़रीद - सबद २२
फरीदा जा लबु ता नेहु किआ लबु त कूड़ा नेहु ॥
सलोक, सेख फरीद, गुरु ग्रंथ साहिब, १३७८

फरीदा जा लबु ता नेहु किआ लबु त कूड़ा नेहु ॥
किचरु झति लघाईऐ छपरि तुटै मेहु ॥१८॥

सार: प्रेम और इच्छा अक्सर एक-दूसरे से जुड़े प्रतीत हो सकते हैं लेकिन इनका स्वभाव और प्रभाव मूल रूप से अलग होता है। इच्छा अहंकार से संचालित होती है, अधिकार और नियंत्रण की चाह रखती है जिससे लालच पैदा होता है। इसके विपरीत, प्रेम निस्वार्थ दान और स्वीकार करना सिखाता है जो आत्मबोध की ओर ले जाता है। प्रेम लोभ से प्रेरित होकर फल-फूल नहीं सकता क्योंकि लोभ अपने स्वभाव में ही छलपूर्ण होता है जो प्रेम की पवित्रता को दूषित कर देता है और उसे शर्तों में बाँधकर कमज़ोर बना देता है।

फरीदा जा लबु ता नेहु किआ लबु त कूड़ा नेहु ॥
फ़रीद कहते हैं कि अगर उद्देश्य लोभ है तब प्रेम कैसे हो सकता है? प्रेम में जब लालच होता है तो वह धोखा होता है।

किचरु झति लघाईऐ छपरि तुटै मेहु ॥१८॥
बारिश होने पर कच्चे छप्पर की छत कितनी देर टिक सकती है? लाक्षणिक रूप से यह दर्शाता है कि लोभ पर टिका प्रेम भी विपत्ति की कसौटी पर खरा नहीं उतर सकता। (१८)

तत्त्व: शेख़ फ़रीद प्रेम और लोभ के बीच के अंतर को एक सशक्त रूपक के माध्यम से स्पष्ट करते हैं। वह कहते हैं कि जो प्रेम लोभ पर आधारित होता है वह गीली मिट्टी से पुती एक कच्ची झोंपड़ी के समान है ऊपर से चाहे जितना भी मज़बूत दिखे लेकिन ज़रा सी तूफ़ानी बारिश में उसकी असलियत सामने आ जाती है। यह हमें हमारी नीयत पर विचार करने की गहरी प्रेरणा देता है। लोभ के रूप में

जो इच्छाएं प्रेम का रूप लेती हैं वह महज़ एक भ्रम हैं, सतही और क्षणिक जो जीवन की कठिनाइयों के सामने नष्ट हो जाती हैं।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com